महामुनि ऋभु की परमा-मुक्ति

(१)

कंस-विजय के पश्चात् व्रज के आकर्षण से आकर्षित श्रीकृष्ण एकबार मथुरा से व्रज में आकर व्रजवासियों का दु:ख मोचन किया था। उसबार कार्तिक पूर्णिमा में श्रीराधिका एवं गोपियों के साथ श्रीकृष्ण ने पुन: रासलीला की थी। रास में जितनी गोपिकाएँ थी, उतने ही कृष्ण होकर वृन्दावनेश्वर हरि दिव्य वृन्दावन में रममाण (भ्रम्यमान) हुए थे। तत्पश्चात् वे गोपिगण के सहित वृन्दावन भ्रमण करते-करते गिरि गोवर्द्धन पर आ पहुँचे। तब शतयूथ गोपिगण के मन में अभिमान भाव देखकर भगवान व्रजपति कृष्ण राधा के साथ वार्तालाप करते-करते पर्वत पर रमणीय स्वर्णलताकुंज में विचरण करने लगे। वहाँ भगवान बद्रीनाथ कर्तृक एक आश्चर्यजनक रमणीय देव सरोवर निर्मित था। उस सरोवर में मत्स्य, कूर्म्म व मगरमच्छ एवं हंस-सारस आदि का समाकुल था; वहाँ का परिवेश उसके चारों तरफ सहस्रदल पद्म मंडित, मधुकर ध्वनि युक्त एवं पुंस्कोकिल के कलरव से माधुर्यपूर्ण था। सरोवर की तीरभूमि पद्मगंध से प्रवाहमान हो रही थी। श्रीकृष्ण ने श्रीराधा के सहित उस सरोवर के तीर पर उपवेसन किया। ब्रह्मानंदन ऋभु महामुनि कृष्ण-ध्यान परायण होकर एक पद पर अवस्थान पूर्वक उस सरोवर के तीर पर तपस्यारत थे। ६६०० वर्षों से अन्न-जल परित्याग कर तप:मग्न उस शान्त स्वभाव मुनि को राधा व कृष्ण ने वहाँ देखा। उसको देखते ही श्रीराधा ने मुस्कराते हुए श्रीकृष्ण को कहा –''एकबार इस महामुनि की भक्ति को देखिए तो, ये भक्त हैं, अतएव इनको गौरव प्रदान कीजिए।'' श्रीकृष्ण ने ''हे ऋभो!'' कहकर उच्च स्वर से उससे सादर संभाषण किया परन्तु ध्यानमग्न मुनि ऐसी ही चरम दशा में उपनीत थे कि वे कृष्ण की पुकार नहीं सुन पाये। तब भगवान उनके हृदय से अन्तर्हित हो गए। मुनीन्द्र ने भगवान को हृदय में न देख पाने पर अति विस्मित होकर नेत्र उन्मीलित कर देखा! सौदामिनी सनाथ मेघ की तरह कृष्ण राधा सहित दश दिशाएं उद्भासित् करते हुए उसके सामने दण्डायमान हैं! यह दर्शन कर हरिभक्ति तत्पर मुनि तत्क्षण उत्थित होकर राधा-कृष्ण की प्रदक्षिणा करते हुए साष्टांग प्रणाम कर श्रीकृष्ण के श्रीपादपद्मों पर पतित हो गये। तत्पश्चात् वे स्तव करने लगे; हृदय पूरित भावभक्ति से गदगद मुनि वाष्प पूरित नयनों से अश्रु मोचन करते-करते स्तव समापनान्त श्रीकृष्ण के चरण कमल पर प्रेमानंद से पतित होते ही प्राणत्याग कर दिए। तभी दश आदित्य समप्रभ एक ज्योति मुनि के हृदय से वहिर्गत होकर दश दिशाओं में घुमते-घुमते श्रीकृष्ण में लीन हो गई। तदनन्तर ब्रह्मर्षि ऋभु की तेजोमय सत्ता कृष्ण-सारूप्य प्राप्त होने से एवं ज्योति कृष्ण में विलीन होने से भक्त की प्रेम लक्षणा भक्ति का अनुभव करके श्रीकृष्ण तब उनको पुन: आह्वान करने लगे। इससे मुनि कृष्णपादपद्म से पुनराय निर्गत होकर कोटि कन्दर्पकान्ति माधुर्य-मण्डित रूप धारणकर कृष्ण के सम्मुख में आविर्भूत हुए। कृपानिधान श्रीकृष्ण तत्क्षण अपने बाहुद्वय द्वारा आलिंगन करते हुए मुनि को अपने हृदय से लगा लेते हैं। अनन्तर ऋभु ऋषि श्रीकृष्ण और श्रीराधिका को प्रणाम व प्रदक्षिणा करते हुए मनोहर रथ पर आरोहण कर गोलोक को प्रस्थान कर गए। *....क्रमश:*

('गर्ग संहिता' से संगृहित)

–मातृचरणाश्रित श्रीमोहित शुक्ला